राष्ट्रभाषा

वर्ष ५७-५८ संयुक्तांक - १२-१ दिसम्बर, २०१२-जनवरी, २०१३

75 अमृत महोत्सव वर्ष

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा
अमृत महोत्सव वर्ष

९ वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन

जोहान्सबर्ग (दक्षिण अफ्रीका)

विदेश राज्यमंत्री माननीया श्रीमती प्रणीति कौर दक्षिण अफ्रीका स्थित जोहान्सबर्ग के
नेल्सन मंडेला सभागृह में
९ वें विश्व हिन्दी सम्मेलन का दीप जलाकर उद्घाटन करते हुए।

के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया जिसके कारण इस सम्मेलन का आयोजन सुचारू रूप से सम्पन्न हो सका।

२. ९ वें विश्व हिन्दी सम्मेलन के उपर्युक्त बिन्दुओं पर कार्रवाई के आलोक में सम्मेलन चाहता है कि –

(१) मॉरीशस में स्थापित विश्व हिन्दी सचिवालय विभिन्न देशों के हिन्दी शिक्षण से सम्बद्ध विश्वविद्यालयों, पाठशालाओं एवं शैक्षिक संस्थानों से संबंधित एक डाटाबेस का बृहत स्रोत केन्द्र स्थापित करे।

(२) विश्व हिन्दी सचिवालय विश्वभर के हिन्दी विद्वानों, लेखकों तथा हिन्दी के प्रचार-प्रसार से सम्बद्ध लोगों का भी एक डाटाबेस तैयार करे।

(३) हिन्दी भाषा की सूचना प्रौद्योगिकी के साथ अनुरूपता को देखते हुए सूचना प्रौद्योगिकी संस्थानों द्वारा हिन्दी भाषा सम्बन्धी उपकरण विकसित करने का महत्वपूर्ण कार्य जारी रखा जाए। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हर संभव सहायता प्रदान की जाए।

(४) विदेशों में हिन्दी शिक्षण के लिए एक मानक पाठ्यक्रम तैयार किए जाने के लिए महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा को अधिकृत किया जाता है।

(५) अफ्रीका में हिन्दी शिक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए और बदलते हुए वैश्विक परिवेश, युवा वर्ग की रुचि एवं आकांक्षाओं को देखते हुए उपयुक्त साहित्य एवं पुस्तकें तैयार की जाएँ।

(६) सूचना प्रौद्योगिकी में देवनागरी लिपि के प्रयोग पर पर्याप्त सॉफ्टवेयर तैयार किए जाएँ ताकि इसका लाभ विश्व भर के हिन्दी भाषियों और प्रेमियों को मिल सके।

(७) अनुवाद की महत्ता देखते हुए अनुवाद के विभिन्न आयामों के संदर्भ में अनुसंधान की आवश्यकता है, अतः इस दिशा में ठोस कार्रवाई की जाए।

(८) विश्व हिन्दी सम्मेलनों के बीच अंतराल में विभिन्न देशों में विशिष्ट विषयों पर क्षेत्रय सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं। इनका उद्देश्य उनके अपने-अपने क्षेत्रों में हिन्दी शिक्षण और हिन्दी के प्रसार में आनेवाली कठिनाइयों का समाधान खोजना है। सम्मेलन ने इसकी सराहना करते हुए इस बात पर बल दिया कि इस कार्य को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

विदेश राज्यमंत्री के हाथों हुआ 'अनुवाद मूल्यांकन' पुस्तक का लोकार्पण

दक्षिण अफ्रीका के जोहांसबर्ग के सैंडटन सिटी में आयोजित ९ वें विश्व हिन्दी सम्मेलन के दौरान महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के शोधार्थी ओमप्रकाश प्रजापति की पुस्तक 'अनुवाद मूल्यांकन' का लोकार्पण विदेश राज्यमंत्री प्रनीत कौर व दक्षिण अफ्रीका में भारत के उच्चायुक्त वीरेन्द्र गुप्ता के हाथों किया गया।

लोकार्पण समारोह के दौरान मौजूद थे – मॉरीशस के कला व संस्कृति मंत्री मुकेश्वर चुनी, विदेश मंत्रालय के सचिव (पश्चिम) एम. गणपति, सांसद सत्यव्रत चतुर्वेदी, रघुवंश प्रसाद सिंह, हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति विभूति नारायण राय, तंकमणि अम्मा, भाषाविद् प्रो. कृष्णकुमार गोस्वामी, प्रतिकुलपति प्रो. ए. अरविंदाक्षन, प्रो. सूरज पालीवाल, प्रो. अनिल के. राय 'अंकित', प्रो. शंभु गुप्त, डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी, डॉ. अन्नपूर्ण चर्ल, डॉ. प्रीति सागर, डॉ. एम. एम. मंगोडी, अशोक मिश्र, राजेश यादव, अमित विश्वास, जयदीप दांगी सहित देश-विदेश से आए बड़ी संख्या में हिन्दी प्रेमी।

शोधार्थी ओमप्रकाश प्रजापति की यह प्रथम पुस्तक है। जिसमें लेखक ने अनुवाद की प्रक्रिया और उसमें आनेवाली कठिनाइयों पर विस्तार से विचार किया है। इस अवसर पर प्रो. के. के. गोस्वामी ने कहा कि आज अनुवाद एक सामाजिक राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय आवश्यकता के रूप में उभरकर आया है। यह जहाँ दो देशों और उनके जन समाजों को परस्पर जोड़ता है, वहीं दो संस्कृतियों को एक-दूसरे के निकट लाने का भी प्रयास करता है। यह पुस्तक इस तथ्य को प्रमाणित करती है। इसीलिए अनुवाद मूल्यांकन को समझने के लिए यह एक बेहद उपयोगी पुस्तक है। अनुवाद के क्षेत्र में इसका स्वागत किया जाना चाहिए।

पुस्तक लोकार्पण के उपरांत उपस्थिथ विद्वतजनों ने प्रजापति को बधाई दी। ओमप्रकाश ने इसके लिए अपने आदरणीय गुरुजनों का आभार प्रकट किया और भविष्य में अकादमिक क्षेत्र में नये-नये कार्य करने का विश्वास भी जताया।

० ० ०